

ResearchPro International Multidisciplinary Journal



Vol- 2, Issue- 1, January-March 2026

ISSN (O)- 3107-9679

Email id: editor@researchprojournal.com

Website- www.researchprojournal.com

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

अरुण सिंह पटेल

सहायक अध्यापक, बेसिक शिक्षा विभाग, आजमगढ़ (उ०प्र०)

Article Info: (Received- 03/01/2026, Accepted- 10/02/2026, Published- 10/02/2026)

DOI- [10.70650/rpimj.2026v2i100009](https://doi.org/10.70650/rpimj.2026v2i100009)

सार तत्व

प्रस्तुत अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि का लिंग एवं विषय वर्ग के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रतिदर्श हेतु अमेठी जनपद के माध्यमिक शिक्षा परिषद उ०प्र० से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों से 100 विद्यार्थियों (50 छात्रा एवं 50 छात्राएं, 50 कला वर्ग एवं 50 विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी) का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि से किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक शोध तथा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के संकलन हेतु उपकरण के रूप में स्वनिर्मित 'कम्प्यूटर विषय में उपलब्धि परीक्षण' का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए हैं— (प) उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ, जिससे यह स्पष्ट होता है, कि कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, (पप) उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर विषय वर्ग के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ, जिससे यह स्पष्ट होता है कि छात्र की कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर विषय वर्ग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, (पपप) उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर विषय वर्ग के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ, जिससे यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं की कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर विषय वर्ग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

मुख्य शब्द— माध्यमिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि, कम्प्यूटर ज्ञान,

प्रस्तावना

मानव द्वारा आदिकाल से ही ज्ञान का संचय किया जा रहा है। प्रत्येक नयी पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी द्वारा कुछ ज्ञान सामाजिक विरासत में प्राप्त होता है, और कुछ वह स्वयं अर्जित करता है। मानव की प्रत्येक पीढ़ी से सीखने की प्रक्रिया की सहायता से और हस्तान्तरण द्वारा ज्ञान में वृद्धि हुई है। ज्ञान की यह परम्परागत श्रृंखला ही शिक्षा है, जिसके द्वारा मानव ने अपनी मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक प्रगति की है। शिक्षा ने ही मानव को पशु स्तर से ऊँचा उठाया है और श्रेष्ठ सांस्कृतिक प्राणी बनाया है और अशिक्षा मानव को अन्धकार की ओर ले जाती है। चीनी सन्त कन्फ़ुशियस ने कहा था— “अज्ञानता एक ऐसी रात्रि के समान है, जिसमें न चाँद है न तारे।” शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान रूपी प्रकाश को प्राप्त कर अज्ञान रूपी रात्रि के अन्धकार को दूर करना है। शिक्षा के अभाव में ज्ञान और विज्ञान दोनों का अभाव होगा।

कम्प्यूटर ने आज की सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली को ही परिवर्तित कर दिया है। कम्प्यूटर न केवल शैक्षिक सहायक

सामग्री को सरलता से उपलब्ध कराता है, अपितु शिक्षण व्यवस्था, शैक्षिक तकनीकी तथा शैक्षिक प्रशासन को अति सुगमता से व्यवस्थित करता है। छात्रों की बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए उनके लिए उत्तम ढंग से शिक्षण-अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करके ज्ञान के संचार-प्रवाह में संगणक (कम्प्यूटर) को प्रभावशाली माध्यम माना जा रहा है।

कम्प्यूटर शिक्षा का प्रयोग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इतना अधिक हो गया है, कि किसी भी प्रयोगशाला, उद्योग, अनुसन्धान केन्द्र, रेलवे, वायु सेवा, बैंकिंग, आधुनिक कार्यालय एवं कई ऐसे विभागों को कम्प्यूटर विहीन होने की कल्पना नहीं की जा सकती है।

कम्प्यूटर विद्युतीय तथा यांत्रिक कलपुर्जों के सम्मिलन से बनी एक ऐसी युक्ति है, जो कि प्रयोगकर्ता से आँकड़े ग्रहण करती है, उन आँकड़ों पर पूर्व निर्धारित स्वरूप में प्रक्रिया करके उसका वांछित परिणाम प्रयोगकर्ता को प्रदान करती है। कम्प्यूटर शिक्षा का प्रयोग आज विभिन्न क्षेत्रों में हो रहा है यह मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किये हुए है। आज के व्यावहारिक युग में कोई भी कार्य बिना कम्प्यूटर के किया जाना असंभव है। मानवीय जीवन में कम्प्यूटर की सर्वव्यापकता को देखते हुए माध्यमिक शिक्षा परिषद ने 'कम्प्यूटर विज्ञान' को एक विषय के रूप में अपने पाठ्य विषयों की सूची में सम्मिलित किया है।

आजकल उ०प्र० के माध्यमिक विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इन प्रमुख पाठ्यक्रमों में विभिन्न प्रकार के व्यवसायों की शिक्षा दी जा रही है। इन व्यवसायों में से एक प्रमुख व्यवसाय कम्प्यूटर शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ा व्यवसाय है।

कम्प्यूटर से सम्बन्धित अभी तक बहुत सीमित ही शोधकार्य हो पाये हैं, कम्प्यूटर शिक्षा का प्रयोग आज विभिन्न क्षेत्रों में हो रहा है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है, कि इसके अन्य क्षेत्रों पर शोधकार्य करके इस विषय में विद्यार्थियों की उपलब्धियों को भी जाना जाय ताकि यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि विद्यार्थी आज के बदलते स्वरूप में अपने को स्थापित करने एवं भविष्य के लिए तैयार कर सकने में कम्प्यूटर विषय को कितना महत्व दे रहे हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि इस स्तर के विद्यार्थियों के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तकें, कम्प्यूटर प्रयोगशालाएं, विषय सामग्री आदि की व्यवस्था की जाये। साथ ही साथ विद्यार्थियों की कम्प्यूटर विषय के प्रति रुचि तथा इसके प्रयोग से विद्यार्थियों में होने वाली शैक्षिक उपलब्धि का भी ज्ञान प्राप्त किया जा सके, जिसके लिए इसमें शोध कार्य करना भी आवश्यक हो गया है।

अतः शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध के माध्यम से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि को जानने का प्रयास किया है।

समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन इस प्रकार निर्धारित किया गया है—

“उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन”।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की संक्रियात्मक परिभाषा

प्रस्तुत अध्ययन में कुछ विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया गया है जो निम्नवत है —

• उच्चतर माध्यमिक स्तर

प्रस्तुत अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर से तात्पर्य उ०प्र० के माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित एवं मान्यता प्राप्त इण्टरमीडिएट स्तर की संस्थाओं के कक्षा-12 के छात्र एवं छात्राओं से है।

• कम्प्यूटर विषय

प्रस्तुत अध्ययन में कम्प्यूटर विषय से तात्पर्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा कम्प्यूटर को एक विषय के रूप में चुनाव करने से है।

• शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित “कम्प्यूटर विषय में उपलब्धि परीक्षण” पर विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंक ही उनके कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करेंगे।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत हैं—

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि का लिंग के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि का विषय वर्ग के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्नवत् हैं—

- H01 उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- H02 उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्रों का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- H03 उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्राओं का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन का परिसीमन

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल उत्तर-प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित मान्यता प्राप्त इण्टरमीडिएट स्तर के विद्यालयों तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के केवल अमेठी जनपद के माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित मान्यता प्राप्त इण्टरमीडिएट स्तर के विद्यालयों तक सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन केवल इण्टरमीडिएट स्तर के कक्षा-12 के विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं तक सीमित है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक शोध तथा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में अमेठी जनपद के माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन विधि

सर्वप्रथम अमेठी जनपद का चयन सुविधाजनक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया। अमेठी जनपद के उ0प्र0 मा0 शि0 परिषद से सम्बद्ध विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों से 6 विद्यालयों का चयन सरल यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया। इन चयनित महाविद्यालयों से 100 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया, जिसमें 50 छात्र एवं 50 छात्राएं शामिल हैं। इन चयनित 100 विद्यार्थियों में 50 कला वर्ग के तथा 50 विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी भी हैं।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में चर के मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित 'कम्प्यूटर विषय में उपलब्धि परीक्षण' उपकरण का प्रयोग किया गया है। इस उपकरण में 50 बहुविकल्पीय प्रकार के प्रश्न हैं प्रत्येक प्रश्न में 4 विकल्प दिये गये हैं जिसमें से 1 विकल्प सही है। सही विकल्प का चयन करने पर सम्बन्धित प्रश्न में 1 अंक प्राप्त होता है, जबकि गलत विकल्प का चयन करने पर सम्बन्धित प्रश्न में 0 अंक प्राप्त होता है।

अतः इस उपकरण में न्यूनतम 0 अंक और अधिकतम 50 अंक प्राप्त किया जा सकता है।

शोध में प्रयुक्त साँख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है। तथा इस अध्ययन में सार्थकता स्तर 0.05 निर्धारित किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण तथा परिणामों की व्याख्या

शून्य परिकल्पना H01 का परीक्षण

इस परिकल्पना का परीक्षण टी-परीक्षण की सहायता से किया गया तथा प्राप्त परिणाम तालिका 1 में दर्शाया गया है।

तालिका 1

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि पर प्राप्त अंकों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच: टी-मान

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	माध्यमानों का अन्तर $D = M_1 \sim M_2$	अन्तर की मानक त्रुटि (σ_D)	टी-मान (t)	स्वतंत्रांश (df)	परिणाम
छात्र	50	24.9	7.15	01	1.39	0.07	98	.05 पर सार्थक नहीं है
छात्रा	50	24.8	6.8					

तालिका 1 से स्पष्ट है, कि छात्र एवं छात्राओं द्वारा उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त अंकों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 1.39 है एवं टी-मान 0.07 है, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 (क=98 पर) के मान क्रमश 1.98 एवं 2.63 से कम है। अतः छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, और शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के मध्यमानों में जो अन्तर दिखाई दे रहा है, वह संयोगवश है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होने का कारण यह है, कि दोनों प्रकार के छात्र एवं छात्राओं को समान अवसर मिलता है। इनकी कक्षाएं एक साथ चलती हैं, और एक ही अध्यापक द्वारा शिक्षण होता है। जिससे इनकी शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पना H02 एवं H03 का परीक्षण

तालिका 2

कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं द्वारा उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त अंकों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच : टी-मान

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	माध्यमानों का अन्तर $D = M_1 \sim M_2$	अन्तर की मानक त्रुटि (σ_D)	टी-मान (t)	स्वतंत्रांश (df)	परिणाम
कला वर्ग के छात्र	25	24.6	6.99	3.0	1.91	1.57	48	.05 स्तर पर सार्थक नहीं है
विज्ञान वर्ग के छात्र	25	27.6	6.2					
कला वर्ग की छात्राएं	25	23.0	7.21	3.6	1.89	1.91	48	.05 स्तर पर सार्थक नहीं है
विज्ञान वर्ग की छात्राएं	25	26.6	5.82					

तालिका 2 से स्पष्ट है, कि कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों द्वारा उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त अंकों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 1.91 है एवं टी-अनुपात का मान 1.57 है जो कि सार्थकता स्तर .05 एवं .01 (df=48 पर) के मान क्रमशः 2.01 एवं 2.68 से कम है। अतः दोनों वर्ग के छात्रों के कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, और शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के मध्यमानों में जो अन्तर दिखाई दे रहा है, वह संयोगवश है।

तालिका 2 से स्पष्ट है, कि कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्राओं द्वारा उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त अंकों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि का मान 1.89 है, एवं टी-अनुपात का मान 1.91 है, जो कि सार्थकता स्तर .05 तथा .01 (df=48 पर) के मान क्रमशः 2.01 एवं 2.68 से कम है। अतः दोनों वर्ग की छात्राओं के कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, और शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। दोनों वर्ग की छात्राओं के मध्यमानों में जो अन्तर दिखाई दे रहा है, वह संयोगवश है।

कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर न होने का कारण यह है, कि दोनों वर्ग के छात्र एवं छात्राओं को स्वतंत्र रूप से अधिगम करने का अवसर मिलता है। दोनों वर्ग के लिए कम्प्यूटर विषय एक जैसा ही है। अतः दोनों वर्ग की कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।

परिणाम

H01 उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H02 उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्रों का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H03 उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्राओं का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित हैं—

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ, जिससे यह स्पष्ट होता है, कि कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ, जिससे यह स्पष्ट होता है कि छात्र की कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर विषय वर्ग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ, जिससे यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं की कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर विषय वर्ग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षिक निहितार्थ

अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि चाहे विज्ञान वर्ग हो या कला वर्ग दोनों वर्गों के छात्रों की कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया, इसलिए आवश्यकता है कि सभी वर्गों (विज्ञान, कला या वाणिज्य) एवं सभी परिवेश (ग्रामीण क्षेत्र या शहरी क्षेत्र) के छात्र एवं छात्राओं को कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति जागरूक किया जाय। इसके लिए कम्प्यूटर विषय पर एक ऐसे सेमिनार, गोष्ठी तथा सभाओं का आयोजन किया जाय, जो इण्टरमीडिएट स्तर का हो, जिससे सभी वर्ग एवं परिवेश के छात्र एवं छात्राओं में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण का विकास किया जा सके।

अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है, कि लिंग के आधार पर छात्र एवं छात्राओं की कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया इसलिए आवश्यकता है, कि लड़कियों की शिक्षा के लिए लिंग भेद नहीं करना चाहिए तथा लड़कों की भाँति लड़कियों को भी समान सुख-सुविधाएँ एवं अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपिल, एच0के0 (2007) अनुसन्धान विधियाँ. एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, आगरा.

2. गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता अलका (2007) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.
3. गुप्ता, एम0एल0 एवं शर्मा डी0डी0 (2010) समाजशास्त्र (शैक्षिक व्यवस्था). साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा.
4. गैरेट, हेनरी ई0 (1995) शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी. कल्याणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
5. पाठक, पी0डी0 (2004) शिक्षा मनोविज्ञान. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
6. पाण्डेय, बी0वी0 (1995) शैक्षिक एवं सामाजिक अनुसन्धान. वसुधरा प्रकाशन, गोरखपुर.
7. मंगल, एस0के0 एवं मंगल, उमा (2011) शिक्षा तकनीकी. पी0एच0आई0 लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ0 860.
8. मंगल, एस0के0 एवं मंगल, उमा (2011) शिक्षा तकनीकी. पी0एच0आई0 लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ0 860.
9. राय, पारसनाथ (1988) अनुसंधान परिचय. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, शिक्षा सम्बन्धित प्रकाशन, आगरा.
10. शर्मा, आर0ए0 (2013) शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया. आर0 लाल0 बुक डिपो, मेरठ, पृ0 153–154.
11. सरीन एवं अन्य (2007) शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
12. सिंह, अरुण कुमार (2006) मनोविज्ञान. समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली.

Cite this Article

"अरुण सिंह पटेल", "उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का कम्प्यूटर विषय में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन", ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3107-9679 (Online), Volume:2, Issue:1, January-March 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."